खोज बड़ी संसार रे

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।।
भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध।
गुन अंग इंद्री के बस परे, तातें बांधत बंध अगाध।।
सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग।
डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।।
गोविंद के गुन गाए के, तापर मांगत दान।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान।।
उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार।।
बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।।
जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सो गोष्ट ग्यान।।